thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 9 अंक 33 28 अगस्त से 03 सितम्बर, 2014 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 भा. शु.. 03

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग बैठक में लिये गये कई महत्त्वपूर्ण निर्णय

सारे देश की आर्य समाजों को गति प्रदान करने के लिए बनाई गई विभिन्न समितियाँ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'', 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 की अन्तरंग सभा की आवश्यक बैठक दिनांक 23 अगस्त, 2014 को सार्वदेशिक सभा के सभागार में सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में प्रात: 11 बजे से प्रारम्भ हुई। इस बैठक में कई महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गये। बैठक में विभिन्न स्थानों से पधारे अन्तरंग सदस्यों तथा विशेष आमन्त्रित निष्ठावान आर्यों से सारा सभागार खचाखच भरा हुआ था।

इस बैठक में विभिन्न प्रदेशों के पदाधिकारी तथा वरिष्ठ कार्यकर्ता भारी संख्या में उपस्थित थे जिनमें मुख्य रूप से श्री सत्यव्रत सामवेदी-जयपुर, श्री प्रेमपाल शास्त्री-दिल्ली, श्री राम सिंह आर्य-जोधपुर, प्रो. विट्ठलराव आर्य-आन्ध्र प्रदेश, श्री मधुर प्रकाश -दिल्ली, श्री गोविन्द सिंह भण्डारी-उत्तराखण्ड, पं. माया प्रकाश त्यागी, डॉ. जय प्रकाश भारती-उ. प्र., श्री विरजानन्द-राजस्थान, स्वामी प्रणवानन्द-दिल्ली, डॉ. लक्ष्मणदास आर्य - मध्य प्रदेश, श्री सन्त कुमार-लुधियाना, डॉ. अनिल आर्य-दिल्ली, प्रो. श्योताज सिंह-हरियाणा, आचार्य सन्तराम-रोहतक, श्री मामचन्द्र रिवाड़िया-दिल्ली, श्री नरेन्द्र वेदालंकार-दिल्ली, कै. अशोक गुलाटी-नोएडा, श्री भंवर लाल आर्य-जोधपुर, श्री सुरेन्द्र सिंह कादियाण-कुरुक्षेत्र, श्री आनन्द प्रकाश आर्य-हापुड़, स्वामी विश्वानन्द सरस्वती-मथुरा, स्वामी रामवेश -जीन्द, स्वामी सोम्यानन्द-मथुरा, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, श्री तेजपाल मलिक उपस्थित थे।

सर्वप्रथम ईश प्रार्थना के उपरान्त दिवंगतजनों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दिवंगतों के निधन पर गहरा दु:ख प्रकट करते हुए कहा कि इन सब महानुभावों के निधन से आर्य समाज एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति हुई है।

तदुपरान्त सभामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने गत अन्तरंग की कार्यवाही पढ़कर सुनाई जिसे सर्वसम्मति से पास किया गया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि गत अन्तरंग सभा में विभिन्न परिस्थितियों के कारण कुछ स्थान रिक्त थे अत: उनको अन्य सुयोग्य महानुभावों को लेकर भर दिया गया है। उन्होंने कहा कि नियमानुसार 35 व्यक्तियों की कार्यकारिणी होती है लेकिन सारे देश में अनेकों प्रतिभाशाली और प्रभावशाली तथा आर्य समाज में पूर्ण निष्ठा रखने वाले बहुत से व्यक्ति हैं उनको विशेष आमंत्रित में सम्मान पूर्वक स्थान दिया गया है। स्वामी जी ने कहा कि सारे देश की आर्य समाजों को ऊर्जा प्रदान करने के लिए तथा देश के हर क्षेत्र में आर्य समाज की गतिविधियों को सुचारू ढंग से चलाने के लिए भविष्य में विशाल स्तर पर अन्तरंग सभा का गठन करने का हमारा विचार है। जिसमें सभी निष्ठावान महानुभावों को अन्तरंग सभा में स्थान दिया जा सके।

स्वामी जी ने आर्य समाज की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना करके जो छवि जो पहचान, जो ओज और जो गरिमा आर्य समाज को दी थी वह आज धूमिल पड़ती जा रही है उसको पुन: प्राप्त करने के लिए हमें प्राण-पण से आर्य समाज के कार्यों में जुटना होगा और उसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमने धर्माय सभा, विद्यार्य सभा, आर्य विद्वत् परिषद्, गौ-संवर्धन, वेद प्रचार समिति, आर्य महिला सभा सहित ग्यारह समितियों का गठन कर दिया है इसमें निष्ठावान परिश्रमी महानुभावों को अध्यक्ष तथा संयोजक नियुक्त किया है जो अपने अनुभवों से इन समितियों के माध्यम से आर्य समाज को गति प्रदान करेंगे।

स्वामी जी ने कहा आर्य समाज में व्याप्त विघटन को समाप्त करने तथा एकता स्थापित करने का हम निरन्तर प्रयास कर रहे हैं क्योंकि संगठन का मजबूत होना अत्यन्त आवश्यक है। एकता प्रयास चलते रहेंगे लेकिन आर्य समाज का कार्य निरन्तर तीव्र गति से करते रहने की आवश्यकता है हम अपने-अपने क्षेत्र में सुयोग्य व्यक्तियों को जोड़ें तथा देश के महत्त्वपूर्ण विषयों को उठाकर कार्य करते हुए विभिन्न मुद्दों के माध्यम से आन्दोलन करें तथा अपनी शक्ति को बढ़ायें।

बैठक में दिल्ली में आर्य समाज क्लब रोड, शालीमार बाग में दिनांक 13-14 सितम्बर, 2014 को आयोजित होने वाले साधारण अधिवेशन की तैयारी के लिए उपस्थित सदस्यों से सुझाव मांगे गये। इस अधिवेशन में विभिन्न प्रान्तों के अतिरिक्त आर्य समाज के वरिष्ठ संन्यासी तथा विद्वान भी सम्मिलित होंगे बैठक में चिन्तन किया जायेगा कि संगठन को किस प्रकार मजबूती प्रदान की जाये। इस अधिवेशन में 50 वरिष्ठ संन्यासियों तथा 50 प्रतिष्ठित विद्वानों को भी सादर आमंत्रित किया जायेगा। सारे देश में एक साथ कैसे आर्य समाज के कार्यों को बढ़ाया जाये तथा महर्षि के स्वप्न को साकार करने के लिए गम्भीर चिन्तन किया जायेगा।

स्वामी जी ने कहा कि आप सबकी सहमति से प्रत्येक प्रदेश में आर्य समाज को सुचारू ढंग से संचालित करने के लिए तथा सुझाव आदि देने के लिए एक-एक प्रभारी की नियुक्ति भी की जायेगी जिसमें प्रत्येक क्षेत्र का सम्पर्क सार्वदेशिक सभा से बना रहे। इन प्रभारियों का मुख्य कार्य आर्य समाज में व्याप्त विघटन को दूर करने के साथ-साथ आर्य समाज को प्रगति पथ पर अग्रसर करना होगा। सभी पक्षों से समायोजन करके गतिरोध को दूर करने का प्रयास किया जायेगा।

स्वामी जी ने कहा कि कुछ व्यक्ति अपने निहित स्वार्थों के लिए आर्य समाज की एकता में रोड़े अटका रहे हैं। आर्य समाज का आम सदस्य यह चाहता है कि संगठन मजबूत हो और कोर्ट कचहरी में मुकदमें बन्द हों। आर्य समाज के कार्यों को बढ़ाने में धन का उपयोग होना चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज के एकता प्रयासों को बल देने के लिए 5 सदस्यों की एक समिति का गठन करने का निश्चय किया है। यह समिति विभिन्न पक्षों को साथ लेकर संगठन को मजबूत करने का कार्य करेगी। इस समिति में वरिष्ठ अधिवक्ता श्री आर. एस. तोमर, प्रो. विट्ठलराव आर्य, पं. माया प्रकाश त्यागी, श्री विरजानन्द तथा श्री मधुर प्रकाश जी को रखा गया है। कुछ प्रदेशों के प्रभारियों की नियुक्ति सभा स्थल पर ही कर दी गई। स्वामी जी ने कहा कि इलेक्ट्रानिक मीडिया का आज के समय में बहुत महत्त्व है अत: सभा में वेबसाईट का कार्य भी द्रुतगति से चल रहा है। विदेश प्रचार का कार्यभार प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्री नरेन्द्र वेदालंकार के संयोजन में किया जायेगा और इनके सहयोगी के रूप में पूर्व राजदूत श्री विद्यासागर वर्मा तथा अशोक गुलाटी नोएडा रहेंगे।

स्वामी जी ने बताया कि सार्वदेशिक सभा के प्रकाशन विभाग को और अधिक शेष पृष्ठ 4 पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का साधारण अधिवेशन आगामी 13 व 14 सितम्बर, 2014 को दिल्ली में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का साधारण अधिवेशन आगामी 13 व 14 सितम्बर, 2014 को दिल्ली के आर्य समाज क्लब रोड, शालीमॉर बाग पश्चिम में आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध सभी प्रान्तीय सभाओं के प्रतिनिधियों को अधिवेशन की विषय सूची (एजेण्डा) पृथक डाक से भेजी जा रही है। सभी प्रतिनिधियों से निवेदन है कि दिल्ली में आयोजित होने वाले सभा के साधारण अधिवेशन में भाग लेने के लिए उपरोक्त निर्धारित तिथि एवं समय पर सम्मेलन स्थल पर पधारकर संगठन को सक्रिय बनाने में सहयोग प्रदान करें।

- प्रो. विट्ठलराव आर्य, मंत्री सार्वदेशिक सभा

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

5 सितम्बर, शिक्षक दिवस पर विशेष

मानव एकता तथा विश्वशान्ति में अध्यापक का योगदान

- डॉ. राजकुमार शाण्डिल्य

अध्यापक बच्चों के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य के लिए ध्यान, योग, प्राणायाम के प्रति रुचि उत्पन्न करके संयम की शिक्षा दे क्योंकि मन नियन्त्रण से विश्व विजय होती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, गुरु नानक देव जी - जैसे महा पुरुषों के जीवन से सम्बन्धित रोचक प्रसंगों से बच्चों के चरित्र का उत्थान करें, उन्हें उदारभावों से पुष्ट करें तथा संकीर्ण भावों से मुक्ति दिलाएँ। अध्यापक बच्चों में त्याग तथा स्नेह की भावना के विकास के लिए निःस्वार्थ भावना वाले परोपकाररत महान् व्यक्तियों के चरित्र से परिचित करवाए।

सम्पूर्ण चराचर जगत् ईश्वर की अद्वितीय रचना है। ईश्वर ने मनुष्य को सर्वाधिक बुद्धिमान् तथा रचनाशील बनाया है। वैदिक काल से ऋषियों ने वास्तविक आनन्द की अनुभूति तथा सुव्यवस्थित जीवन का साधन धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष नामक पुरुषार्थ चतुष्टय को माना है। इनका असंतुलन ही अशान्ति का मूल कारण है। ऐकान्तिक और आत्यन्तिक दुःख की निवृत्ति के लिए दर्शनशास्त्र का उदय हुआ है। यदि इन्द्रियोपभोग में ही वास्तविक सुख हो तो धनी तथा सामर्थ्य वाले कभी दुःख न पावे। लोभ की प्रवृत्ति मानसिक शान्ति में बाधक है। यह लोभ ही पापों की जड़ तथा अन्तहीन व्याधि है। मनुष्य के मन में विविध वस्तुओं तथा धनसंग्रह की प्रवृत्ति निरन्तर बनी रहती है और इसके लिए वह सद् असद् कर्मों का आकलन नहीं करता है। अतः अविवेक के कारण मानसिक अस्थिरता का शिकार होता है। आज चार्वाक दर्शन से प्रभावित मनुष्य अर्थ और काम की पूर्ति में ही प्रवृत्त है। युवावस्था, धन, स्वामित्व, विवेकशून्यता चारों का एक ही स्थान पर होना निश्चय ही अनर्थकर होता है। सन्तान परम्परा के लिए ग्राह्य काम आज विलास का साधन बन गया है। काम के क्षेत्र में अतिचार स्वास्थ्य की दृष्टि से भी हानिकर है तथा पतन का कारण है। भोगवादियों को एड्स जैसे असाध्य रोग भी निगल रहे हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में काम, क्रोध और लोभ को सब अनर्थों का मूल होने से नरक के द्वार कहा है। मनुष्य क्रमशः क्रोध, सम्मोह, स्मृतिभ्रम, बुद्धि नाश तथा विनाश की ओर जाता है।

आज भौतिकवाद के कारण धनलिप्सा बढ़ी है। मनुष्य अति महत्त्वाकांक्षा, पदलोलुपता, धनसंग्रह की प्रवृत्ति तथा धार्मिक कट्टरता के कारण मानव के विनाश को भी हेय, तुच्छ तथा स्वगरिमा के प्रतिकूल नहीं मानता। वह विवेकशून्य होकर कण-कण में विद्यमान ईश्वर के अंश प्राणिजगत् को क्रोध तथा हिंसा का शिकार बना रहा है। वह धनलोलुपता तथा धार्मिक उन्माद के कारण निरीह प्राणियों में कलह तथा हिंसा फैलाकर स्वार्थ सिद्धि में लगा है।

वैज्ञानिक आविष्कारों से विश्व महाविनाश की ओर अग्रसर हुआ है। हिंसा से निपटने के लिए प्रति हिंसा अभियान। महात्मा गाँधी ने मानव कल्याण के लिए अहिंसा और शांति का सन्देश दिया। प्रतिहिंसा के भीषण परिणामों को ध्यान में रखकर प्रतिशोध की ज्वाला को विवेक के शीतल जल से शान्त करके मानवता का विनाश रोका जा सकता है। संकीर्ण राष्ट्रीयता भी विश्वशान्ति में बाधक है। बलात्कार, अपहरण, लूट, अधिक धन, धर्म, भाषा, क्षेत्र, ईर्ष्या और अहंकार सभी तत्व मानव एकता में बाधक हैं। आज बुद्धिवाद के कारण मानवीय भावनाएँ तुच्छ हो जाने से मनुष्य की मनुष्य से दूरी बढ़ गई है।

भारतीय समृद्ध संस्कृति तथा ज्ञान के अजस्र स्रोत ऋग्वेद में सम्पूर्ण विश्व में मानव एकता के लिए बहुत सुन्दर प्रार्थना की गई है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना भी इसकी महत्ता प्रदर्शित करती है। यहीं पर सभी विश्व नागरिकों को सुखी, नीरोग तथा कल्याणकारी देखने की कामना मानवतावाद का चरमबिन्दु है। हमारी संस्कृति 'सादा जीवन उच्च विचार' दार्शनिकता वाली है। मानव एकता, स्नेह तथा शान्ति की कामना से वैदिक साहित्य सम्पूर्ण विश्व के लिए आदर्श है। तैत्तिरीयोपनिषद् में शान्तिपाठ द्रष्टव्य है। यहाँ सूर्य, वरुण, अर्यमा तथा सर्वव्यापक विष्णु से कल्याण की कामना की है।

शिक्षित मनुष्य ही सभ्य तथा सुसंस्कृत कहलाता है। शिक्षा के बिना मनुष्य का जीवन नीरस तथा निरर्थक है। बच्चे की जन्मजात शक्तियों का समुचित विकास करके राष्ट्रनिर्माण में योगदान करने से अध्यापक राष्ट्रनिर्माता कहलाता है। अध्यापकवृन्द ही समाज को उचित दिशा देकर समाज की दशा सुधारता है। सतत अध्ययनशील रहकर ज्ञानार्जन करना अध्यापक का कर्त्तव्य है। अध्यापक शुद्ध आचरण के कारण आचार्य तथा ज्ञान के प्रकाश से अज्ञान का अन्धकार दूर करने के कारण गुरु कहलाता है। गुरु के दोषों का आवरण आच्छादन करने वाला शिष्य छात्र कहलाता है। महाकवि कालिदास ने विद्वान् तथा ज्ञान को शिष्य तक पहुँचाने की कला दोनों गुणों से सम्पन्न शिक्षक को ही शिरोमणि माना है।

अध्यापक बच्चों के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य के लिए ध्यान, योग, प्राणायाम के प्रति रुचि उत्पन्न करके संयम की शिक्षा दे क्योंकि मन नियन्त्रण से विश्व विजय होती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, गुरु नानक देव जी - जैसे महा पुरुषों के जीवन से सम्बन्धित रोचक प्रसंगों से बच्चों के चरित्र का उत्थान करें, उन्हें उदारभावों से पुष्ट करें तथा संकीर्ण भावों से मुक्ति दिलाएँ।

अध्यापक बच्चों में त्याग तथा स्नेह की भावना के विकास के लिए निःस्वार्थ भावना वाले परोपकाररत महान् व्यक्तियों के चरित्र से परिचित करवाए क्योंकि - तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम् उपनिषदों की वाणी को जीवन का आदर्श वाक्य मानने वालों ने प्रचुर ख्याति अर्जित की है। महात्मा गाँधी जैसे महान् व्यक्तियों के चरित्र से सहनशीलता, सत्य तथा अहिंसा का विकास करें। बच्चों को वेद उपनिषद् तथा गीता के कर्मयोग के सिद्धान्त का महत्त्व समझाकर सतत कार्य के प्रति निष्ठा की प्रेरणा दें।

अध्यापक ही छात्रों को सत्य, धर्मनिष्ठा तथा सतत स्वाध्याय के लिए प्रेरित कर सकता है क्योंकि विद्या की महिमा सर्वविदित है। अध्यापक दैनिक घटनाओं पर छात्रों से चर्चा करके उन्हें चिन्तन के लिए प्रेरित कर सकता है। अध्यापक स्वयं कर्त्तव्य निष्ठा, सत्य, त्याग, विवेक, धार्मिक सहिष्णुता तथा सादगी का आदर्श स्थापित करके बच्चों को इन गुणों को ग्रहण करने के लिए प्रेरित करें तभी विश्व में मानव-एकता तथा शान्ति की स्थापना की जा सकती है। और मानवमात्र का कल्याण सम्भव होगा।

- रा. आ. व. मा. वि. करसान, चण्डीगढ़

आदमी पर निबन्ध

जंगल की एक निबन्ध प्रतियोगिता में गाय ने आदमी पर निबन्ध लिखा, जो इस प्रकार है। आदमी एक दोपाया जानवर होता है। उसको दो कान, दो आंखें और दो हाथ होते हैं। वह सब कुछ खाता है। उसका पेट बहुत बड़ा तो नहीं होता, लेकिन कभी भरता नहीं है। यही कारण है कि आदमी जुगाली नहीं करता। उसके सींग नहीं होते, लेकिन वह सबको मारता है। उसके दुम नहीं होती, लेकिन वह दुम हिला सकता है। वह एक अद्भुत किस्म का प्राणी है। उसके बच्चे भी बड़े होकर आदमी ही बनते हैं। आदमी हर जगह पाया जाता है। गांवों में, शहरों में, पहाड़ों और मैदानों में, रेगिस्तान से लेकर अंटार्कटिका जैसे ठंडे स्थानों पर भी पाया जाता है। वह कहीं भी रह सकता है, लेकिन जहां रहता है उस जगह को जहरीला कर देता है। उससे दुनिया के सारे जानवर डरते हैं। वह जानवरों का दुश्मन तो है ही पेड़-पौधों का भी शत्रु है।

आदमियों के अनेक प्रकार होते हैं। गोरा आदमी, काला आदमी, हिन्दू आदमी, मुसलमान आदमी, ऊँची जाति का, नीची जाति का। पर सबसे अधिक संख्या में पाए जाते हैं धनी आदमी, गरीब आदमी। आदमी हमेशा लड़ने वाला जीव होता है। वह नाम, मान, जान, पहचान, आन और खानदान के लिए लड़ता ही रहता है। सबसे अधिक अपनी पहचान के लिए लड़ता है। जानवरों में यह हंसी की बात मानी जाती है कि पहचान के लिए कोई लड़े। किसी के सींग छोटे हैं तो किसी के बड़े। किसी की दुम छोटी है तो किसी की बड़ी। हाथी के कान विशाल होते हैं तो ऊँट के एकदम छोटे, लेकिन दोनों लड़ते नहीं हैं। कौआ काला होता है। तोता हरा, लेकिन दोनों एक ही डाल पर प्रेम से रह सकते हैं। आदमियों में सबसे ज्यादा लड़ाई पहचान के लिए होती है। कहते हैं कि आदमी एक सामाजिक प्राणी है, जबकि समाज में रहना उसे आता ही नहीं। वह सबसे ज्यादा अपने पड़ोसी से लड़ता है। वह दो इंच जमीन के लिए भी लड़ सकता है और एक गज कपड़े के लिए भी। और तो और वह एक पके पपीते के लिए चौबीस घंटे अनवरत लड़े तो जानवरों को आश्चर्य नहीं होगा। लड़ने के लिए धर्म और जाति बनाई गई है। जानवरों में जाति और धर्म नहीं है तो वह कितने सुख से रहता है। ऐसा नहीं कि शेर के शक्तिशाली भगवान हैं और उन्हें मांसाहार पसंद है, तो खरगोश के भगवान शाकाहारी हैं। उनका अवतार जंगल को शोरों से मुक्त कराने के लिए हुआ था। मछलियों के भगवान पानी में रहते तो बंदरों के पेड़ पर। यदि ऐसा होता तो जंगल में जानवर लड़ते-लड़ते मर जाते। शुक्र है, जानवरों के पूर्वजों के दिमाग में ऐसी बातें नहीं आई। नहीं तो जंगल भी नगर बन जाते। हंसी तो तब आती है जब इतनी लड़ाइयों के बावजूद आदमी अपने को सामाजिक प्राणी मानता है। धन्य है आदमी।

- *रचनाकार ब्लॉग में शशिकांत सिंह 'शशि'*

thearyasamaj.org

मूर्ति पूजा : मूल में भूल

...गतांक से आगे

-डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियान

यहाँ जड़ तत्त्वों से उनका आशय मूर्तिपूजा से भी है। जब परमात्मा को अजन्मा माना गया है तो उसकी मूर्ति कैसे बन सकती है?समझ पाना कठिन है कि गीता प्रेस, गोरखपुर एक और योगदर्शन और गोयन्दका जी की ही 'नौ उपनिषदों की टीका'' तथा स्वामी आ`मानन्द जी का 'पातञ्जलयोग-प्रदीप' प्रकाशित कर रहे हैं जिनमें निराकार परमेश्वर का प्रतिपादन किया है और दूसरी ओर उन पुराणों का प्रकाशन भी साथ-साथ कर रहे हैं जो अवतारवाद से भरे हैं, साकारवाद की खुली वकालत कर रहे हैं। इस दोहरी मानसिकता को अध्यात्म के नाम पर परिहास ही माना जा सकता है। अट भी मेरी, पट भी मेरी, अण्टा मेरे बाप का, यह जबरदस्ती कम से कम अध्यात्म के क्षेत्र में तो नहीं चलनी चाहिए। क्या इसे बाजारवादी सोच की संज्ञा दी जाये?महर्षि दयानन्द को भी लालच दिया गया था कि आपको अवतार घोषित कर दिया जायेगा, आप मूर्तिपूजा का खण्डन करना छोड़ दीजिए जिस पर लाखों लोगों की आजीविका चलती है। लेकिन देव दयानन्द इन प्रलोभनों से ऊँची उठी हुई आत्मा थे। उन्होंने अपमान सह लिए, प्राण दे दिए लेकिन सत्य से समझौता नहीं किया, असत्य को समादृत नहीं किया। इसी संघर्ष, मिशन और शंखनाद को आर्य समाज गत सवा सौ वर्ष से जीवंत रखे हुए है। इसी वैदिक सत्य को स्वीकार कर कबीर, नानक व अनेक हिन्दू सम्प्रदाय मूर्तिपूजा को नहीं मान रहे हैं। कुछेक अपवाद को छोड़कर समूचा मुस्लिम व ईसाई जगत् भी मूर्तिपूजा को अस्वीकार्य मान रहा है। क्या केवल आजीविका की खातिर निराकारवाद की वैदिक मान्यता से खिलवाड़ करना उचित माना जा सकता है?केवल यही एक कारण नहीं है। जैसा कि हम पहले कह आये हैं मूर्तिपूजा की आड़ में अनेक समीकरण या ध्रुवीकरण साधे जाते रहे हैं। व्यवसाय का समीकरण तो एक स्वाभाविक फलश्रुति है ही, इसके साथ-साथ मूर्तिपूजा की आड़ में सम्प्रदाय की अस्मिता को बचाना मुख्य समीकरण है, गुरुडम को बनाये रखना, समुदाय विशेष को एकत्र व सक्रिय रखना, तीर्थों की महत्ता को बनाये रखना अन्य समीकरण हैं। अब मूर्तिपूजा से राजनैतिक समीकरण तैयार करने की होड़ भी शुरू हो चुकी है। चुनाव से पहले नरेन्द्र मोदी का वैष्णो देवी जाना और अरविन्द केजरीवाल का संगम में डुबकी लगाना इसके ताजा उदाहरण हैं। बजट में काशी पर और माँ गंगा पर कृपा दृष्टि रखना तथा राम मन्दिर को लेकर भाजपा और कांग्रेस द्वारा समय-समय पर दांव खेलना इसी ओर संकेत करता है। हज यात्रियों को सब्सिडी देना और ईसाईयों को विदेशी धन व धर्म परिवर्तन कराने की छूट मिलना भले मूर्तिपूजा को बढ़ावा देना न माना जाये लेकिन साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण की गंध तो उससे भी मिलती ही है। ऐसे सभी प्रयासों से वैदिक मान्यताओं को गहरा धक्का लगता है और उन मान्यताओं को मानने वालों की आस्था पर गहरी चोट लगती है। सत्य का गला घोटने वाली, अध्यात्म का विनाश करने वाली इस लीला का अन्त क्या कभी हो पायेगा?जो जानबूझ कर ये अपराध कर रहे हैं, क्या उन पर कोई अदालत संज्ञान लेगी?क्या आस्था, श्रद्धा और विश्वास केवल अवैदिक धर्मियों का ट्रेड मार्का बने रहेंगे?क्या आर्यसमाजी, सिख और कबीर पंथी बिना किसी आस्था, श्रद्धा, विश्वास के अध्यात्म को जियेंगे, परमात्मा को भजेंगे?इन पर क्या केवल साकारवादियों का एकाधिकार रहेगा?जब हर क्षेत्र में अनुसंधान हो रहे हैं, बहसें हो रही हैं, मुकाबले हो रहे हैं, आलोचना-प्रत्यालोचनाएं हो रही हैं, तर्क और विज्ञान का हस्तक्षेप हो रहा है, तुलनात्मक अध्ययन और विमर्श हो रहा है, इतिहास और परम्परा का आलोडन हो रहा है, चमत्कारों और प्राकृतिक घटनाओं का विश्लेषण हो रहा है तो इन सभी कसौटियों पर साकारवाद, अवतारवाद, अनेकेश्वरवाद, श्राद्ध-तर्पण, तन्त्र-विद्या, फलित ज्योतिष, मूर्तिपूजा और तीर्थाटन की परीक्षा क्यों नहीं हो सकती?इस ओर कदम उठाने वाले हर व्यक्ति को डॉ. नरेन्द्र डाभोलकर या दयानन्द समझ कर कब तक सूली पर चढ़ा कर कथित धर्म की रक्षा की जायेगी?स्वामी अग्निवेश के सिर पर दस लाख की घोषणा करने वाले लोग आखिर कब सोचेंगे कि इस देश की आत्मा, संस्कृति, सभ्यता, धर्म, अध्यात्म, सत्य और नैतिकता वेदों में निवास करती है न कि बर्फानी बाबा अमरनाथ में जिसकी खोज का श्रेय किसी हिन्दू को नहीं एक मुस्लिम को जाता है। जब उस मुस्लिम ने बर्फ के प्राकृतिक लिंग में कोई चमत्कार नहीं देखा, उसे संगे असवद समझ कर नहीं चूमा तो हिन्दुओं ने उसमें शिव परिवार की कल्पना कैसे कर ली?इससे पूर्व किसी पुराण या शास्त्र ने इसकी चर्चा क्यों नहीं की थी?आस्था के इस प्रतीक को रक्षा नकली बर्फ से करने का क्या औचित्य था?इस तरह के नये-नये अवतारों की उदभावना और पूजा आखिर कब तक होती रहेगी और जो सच्चा परमात्मा है, मालिक है, नियंता है इनकी आड़ में उसकी अवहेलना कब तक होती रहेगी?आस्था, श्रद्धा और विश्वास के नाम पर यह अध्यात्म पर, हमारी परम्परा पर, हमारे दर्शन पर क्या गहरा आघात नहीं है?

आत्मा का स्वरूप

पाखण्ड और अंधविश्वास फैलने का एक अन्य कारण है ईश्वर की तरह आत्मा के यथार्थ स्वरूप को न जानना। आत्मा सत् चित् स्वरूप है जो शरीर नहीं है बल्कि जागृत शरीर में वास करने वाला पदार्थ है। आत्मा परमात्मा का अंश नहीं है बल्कि इसकी स्वतंत्र सत्ता है जो कर्म करने में स्वतंत्र किन्तु फल भोगने में परतन्त्र है, ईश्वराधीन है। शरीर नाशवान, क्षण भंगुर, अनित्य और जड़ है किन्तु जीव अजर, अमर, अविनाशी, नित्य और चेतन है। जीव अल्पज्ञ और अल्प सामर्थ्य वाला है, एकदेशी है, कर्ता और भोक्ता है। पुरुष बहुत्वं व्यवस्थात: (सांख्यदर्शन अ. 6 सूक्त 45) के अनुसार आत्माओं की संख्या अनन्त है। न्याय दर्शन (1/1/10) के अनुसार इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख-दु:ख, ज्ञान छः गुण जीव में पाये जाते हैं। जीवात्मा रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द से प्रभावित है। आत्मा इतना सूक्ष्म पदार्थ है कि एक परमाणु में भी रह सकता है। विचार करें जब परमात्मा निराकार है, आत्मा निराकार है तो साकार की, मूर्ति की पूजा का क्या औचित्य है?कठोपनिषद् कहता है -

अशरीरं शरीरेष्वतवस्थेष्ववस्थितम्।
महान्तं विभुमात्मानं मत्वा धीरो न शोचति॥

वह परमात्मा बिना हाथ-पांव के संसार को वश में करता है,
बिना आंख के देखता है, बिना कान के सुनता है।
वह निराकार है तथा आत्मा में उसका निवास बताया है।

इसी सत्य का समर्थन करते हुए संत तुलसीदास कहते हैं :-

बिन पग चलेहुँ, सुनेहुँ बिन काना।
कर बिन कर्म, करहि विधि नाना॥

शिवपुराण वायु सहिता अ. 4 का श्लोक सं. 87 भी इसी पक्ष का समर्थक है। कठोपनिषद् (2/3/9) भी यही मानता है।

मूर्ति की निस्सारता कबीर के इस व्यंग्य से सिद्ध होती है -

पाथर पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहार।

ताते तो चाकी भली, पीस खाए संसार॥

आदि शंकराचार्य जी अपनी प्रसिद्ध रचना 'परापूजा' में अनेक प्रश्न मूर्तिपूजा को लेकर उठाते हैं -

निर्लेपस्य कुतो गन्धं पुष्पं निर्वासनस्य च।
निर्गन्धस्य कुतो धूपं स्वप्रकाशस्य दीपकम्॥

अर्थात् - जो ईश्वर निर्लेप है उसे कहां चन्दन लगाओगे, जो निर्वासन है उसे पुष्प कैसे चढ़ाओगे?जिसे गन्ध का प्रयोजन नहीं धूप उसे कहां, और क्यों?और जो स्वप्रकाशवान् है, संसार को प्रकाशित करता है उसे दीपक का अर्घ्य क्यों?

संत तुलसीदास प्रतिमा-पूजन पर व्यंग्य करते हैं -

तुलसी प्रतिमा पूजवो, है गुडियन को खेल।
जा दिन गई ससुराल, दिए पिटाली मेल॥

पूजा के सर्वोत्तम स्तर का निर्धारण करते हुए शंकराचार्य जी 'पुराण वाक्यम्' में लिखते हैं -

अधम प्रतिमा पूजा स्तोत्रजप्यां च मध्यमा।
उत्तमा निगमा पूजा सोऽहं पूजा महात्मन:॥

अर्थात् - प्रतिमा पूजा अधम है। स्त्रोतों का जपना मध्य स्थान में है, वेद पूजा (वैदिक मान्यताओं को अपनाना) सर्वोत्तम है और महात्माओं की पूजा 'सोऽहम्' है।

महापण्डित चाणक्य व्यवस्था देते हैं -

न देवो विद्यते काष्ठे न पाषाणे न मृन्मये

महादेव काष्ठ में, पत्थर में, मिट्टी निर्मित मूर्ति में होते हुए भी उनमें उनका साक्षात्कार नहीं होता। मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा करने का यहाँ स्पष्ट निषेध है।

शंकराचार्य जी 'परापूजा' में मूर्तिपूजा का स्पष्ट निषेध करते हैं :-

तीर्थे पशुयज्ञेषु काष्ठपाषाण मृन्मये।
प्रतिमायां मनो येषं तेनरा मूढ़ चेतस:॥

अर्थात् तीर्थाटन, पशु-यज्ञ, लकड़ी, पत्थर और मिट्टी की मूर्तियों में जिनका मन (आस्था, श्रद्धा, विश्वास) है, वे लोग मूर्ख से भी आगे मूढ़ हैं।

ईश्वर तो आत्मा में विराजमान है अत: अन्यत्र उसकी खोज करना, उसकी पूजा करना व्यर्थ है। इस ओर संकेत करते हुए शंकराचार्य जी आगे कहते हैं :-

स्वगृहे पायसं त्वक्त्वा भिक्षामिच्छति दुर्मते।
शिलामृतदारूचित्रेषु देवता बुद्धि कल्पिता॥

अर्थात् अपने घर की खीर छोड़कर अरे दुर्मत! भिक्षा मांगता फिरता है। पत्थर, मिट्टी, लकड़ियों के चित्र में देवता बुद्धि रखता है। तात्पर्य स्पष्ट है ईश्वर तेरी आत्मा में ही है, कहीं बाहर नहीं अत: उसे कहीं बाहर साकार रूप में इधर-उधर ढूंढ़ना उचित नहीं।

गुरु ग्रन्थ साहब की स्पष्ट मान्यता है -

पाथर ले पूजहि मुगध गंवार।
ओहि जा आपि डूबे, तुम कहा तरनहार॥
बुत पूज-पूज हिन्दु मुए, तुरक मुए सिरू नाई।
ओहन जारे, ओहन गाड़े तेरी गति दुहू न पाये॥

संत दादू का कथन है -

पत्थर पीवे धोई के, पत्थर पूजे प्रान।
अन्तकाल पत्थर भये, भव डूबे अज्ञान॥

संत तुकाराम जी भी मूर्ति पूजा के विरोधी थे। वे लिखते हैं -

दगड़ावे देव पूर्वी नन्हते जाणु, जनेह अज्ञान झाले जेन्हा।
जनेह अज्ञानी दगड़ा मानिले, गुरुसि त्यागले मूढ़ पढ़े॥

हे मनुष्य! निश्चित समझो कि प्राचीनकाल में पत्थरों के देव नहीं हुआ करते थे। जो लोग अज्ञानी (कुचक्री) बन गये, उन अज्ञानी लोगों ने पत्थर का मानना (प्रतिमा-पूजन) प्रारम्भ कर दिया और अपनी इस मूर्खता से सच्चे गुरु को त्याग दिया।

माना जाता है कि भारत में मूर्तिपूजा का प्रारम्भ यूनानियों, जैनियों, बौद्धों से हुआ और इसका पोषण और फैलाव पुराणों द्वारा दी गई व्यवस्था के कारण हुआ है। लेकिन कहीं-कहीं पुराण भी निराकार परमात्मा का बखान करते हैं और उसका निवास आत्मा में मानते हैं। इन स्थलों को देखकर अनुमान लगाना कठिन नहीं कि बाद में ही मूल पुराणों में भारी प्रक्षेपण अर्थात् मिलावट समय-समय पर स्वार्थी धर्म-ध्वजों द्वारा होती रही है। शिव पुराण के कुछ उद्धरण प्रस्तुत हैं -

सर्वं तु जगत् सर्वत्र व्याप्त तिष्ठति शाश्वत:।
तथापि क्वपि केनापि व्यक्तमेष न दृश्यते॥ 46॥
नैवायं चक्षुषा ग्राहयो नापरैरिन्द्रयैरपि।
मनसैव प्रदीप्तेन महानात्मावसीयते॥47॥
तिलेषु वा यथा तैलं दधिवा सर्पिरर्पितम्।
यथाप: स्वोतसि व्याप्तो ययथारण्यां हुताशन:॥74॥
एवमेव महात्मानमात्मान्यात्माविलक्षणम्।
सत्येन तपसा चैव नित्ययुक्तोऽनुपश्यति॥75॥

- शिव पुराण, वायु सं. अ. 8

अर्थात् - वह (ईश्वर) सब में सर्वत्र व्यापक होकर ठहरा हुआ है, तो भी कहीं किसी से प्रकट रूप में नहीं देखा जाता॥46॥ न वह आंखों से देखा जा सकता है, न अन्य इन्द्रियों से ग्रहण किया जा सकता है अर्थात् वह आकार रहित, निराकार है। प्रकाशित मन (आत्मा) से उस महान् आत्मा परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है॥47॥

जैसे तिलों में तेल और दही में घृत छिपा है, जैसे पानी स्रोत में और अरणी में अग्नि छिपा है॥74॥ वैसे विलक्षण परमात्मा आत्मा में छिपा रहता है। उसको योगी सत्य और तप से नित्य अपने आत्मा में देखता है अर्थात् उसका प्रत्यक्ष अनुभव करता है॥75॥

वायु पुराण का यह उद्धरण भी द्रष्टव्य है -

गन्धवर्णरसैर्हीन: शब्दस्पर्शविवर्जितम्।
अजातं ध्रुवमक्षययं नित्यं स्वात्मन्यस्थितम्॥18॥

वायु पु. अ. 4.

अर्थात् - गन्ध, वर्ण, रस, शब्द, स्पर्श, रूप आदि विषयों से रहित, अजन्मा, नित्य, अविनाशी परमात्मा आत्मा में स्थित है।

इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि परमात्मा निराकार है, आत्मा में उसका वास है और, मूर्तिपूजा से नहीं वैदिक स्तुति, प्रार्थना, उपासना से, यम-नियम का पालन करते हुए उसका अनुभव किया जा सकता है न कि मूर्ति पूजा से।

रामचरितमानस में तुलसीदास यहां तक लिखते हैं :-

चौदह भुवन एक पति होई। भूत द्रोह तिष्ठहि नहि कोई॥
अस प्रभु छोड़ भजहि जो आना। ते नर पशु बिनु पूंछ विसाना॥

अर्थात् सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का एक ही अधिपति है, अत: भूतादि द्रोह ठहर नहीं सकता। ऐसा प्रभु जो सर्वान्तर्यामी है, उसे छोड़कर अन्यत्र देवी-देवताओं, पाषाण-प्रतिमाओं को भजते-पूजते हैं वे मनुष्य बिना पूंछ और बिना सींग के पशु सदृश हैं अर्थात् विकृत मन: हैं। चलहिं कुपथ वेदमग छांडे वेद पथ को त्यागने वाले ये लोग कुमार्गी हैं। कपट कलेवर कलि मल भांडे ऐसे कुमार्गी कपटी हैं और पाप एवं विष्ठा के पात्र हैं।

शेष अगले अंक में

thearyasamaj.org

देश की समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं के सम्मानित पदाधिकारियों से विनम्र निवेदन

– स्वामी आर्यवेश

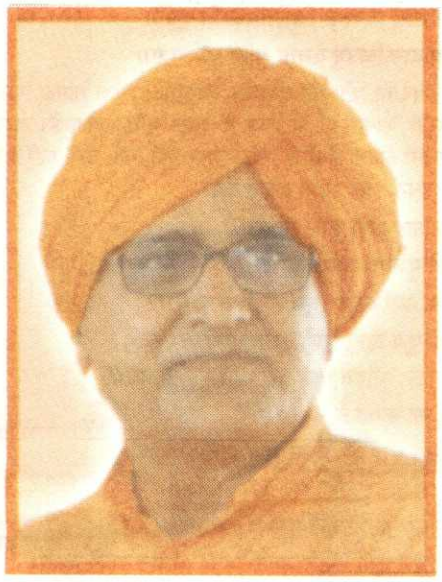

स्वामी दयानन्द जी के प्रादुर्भाव के समय समाज संकीर्ण मानसिकता, मूढ़ता अज्ञान एवं सत्यासत्य के अविवेक से ग्रसित था। स्वामी दयानन्द जी ने अपनी नवीन दृष्टि के द्वारा समाज के प्रत्येक क्षेत्र में सुधार का बीड़ा उठाया तथा वे इसमें सफल भी हुए। लेकिन जब हम वर्तमान परिदृश्य को देखते हैं तो समाज में फैली बुराइयां तथा कुरीतियां पहले से कहीं अधिक जटिल दृष्टिगोचर हो रही हैं और हम आर्यों का कार्य पहले से कहीं अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण हो गया है। क्योंकि आज सबसे बड़ा आघात आर्य समाज को लग रहा है आपसी विघटन से। ऋषि ने भारत के पतन का कारण आपसी फूट भी बताया है। यही आपसी फूट ईर्ष्या द्वेश तथा स्वार्थभाव आर्य समाज को भी दुर्दिन दिखा रहा है। सभा प्रधान का दायित्व लेने के पश्चात् मैं जहाँ-जहाँ भी जाता हूँ वहीं यह माँग प्रमुखता से उठाई जाती है कि आर्य समाज का विघटन समाप्त होना चाहिए और आपस में एकता होनी चाहिए। मैं अपने स्तर पर इस विघटन को दूर करने का गम्भीर प्रयास निरन्तर कर रहा हूँ और आप सब आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारियों से यह आशा करता हूँ कि प्रान्तीय सभाओं में होने वाले छोटे-मोटे विवादों को अपने स्तर पर सुलझाने का गम्भीर प्रयास करें क्योंकि जब तक प्रान्तीय सभाओं के विवाद जारी रहेंगे तब तक उच्च स्तर पर एकता स्थापित करने में रोड़े अटकते रहेंगे। मेरा आप सब से निवेदन है कि संगठन को शक्तिशाली बनाने के लिए आप सब एकजुट होकर कार्य करें। हमारी आन्तरिक स्थिति और वातावरण को देखकर युवा वर्ग और नये सदस्य अधिक मात्रा में हमसे नहीं जुड़ पा रहे हैं। वर्तमान आर्य समाज के स्वरूप, संगठन, अधिकारियों आदि को देखते हैं तो भावनाशील ऋषि भक्त तथा तटस्थ व्यक्तियों को अत्यन्त पीड़ा का अनुभव हो रहा है। आर्य समाज की ओर आकर्षित होने के दो मुख्य कारण थे। पहला इसके सिद्धान्तों व आदर्शों की विशेषताएं दूसरा इसके अनुयायियों का चारित्रिक आकर्षण। आज इन दोनों ही बातों का अभाव दिखाई दे रहा है। इसको दूर करने की अत्यन्त आवश्यकता है।

मैं सारे देश की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के सम्माननीय अधिकारियों से विनम्रता पूर्वक कहना चाहता हूँ कि देश में जिस तेजी से धार्मिक पाखण्ड बढ़ा है उससे सामाजिक एकता, धार्मिक एकता तथा राष्ट्रीय एकता तीनों के लिए गम्भीर खतरा पैदा हो गया है। दोहरा चरित्र जीने वाले इन पाखण्डियों का परदे के पीछे का रूप अत्यन्त भयावह है इनसे देश को मुक्त कराना ही होगा। अत: आप सब धार्मिक पाखण्ड और भ्रष्टाचार के विरुद्ध सारे देश में अभियान चलाये तथा इन सामाजिक बुराइयों को दूर करने में युवा शक्ति का भरपूर सहयोग लिया जाये। युवाओं को जोड़ना हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। आर्य समाज ही वह संगठन है, जो समाज में फैले अन्धकार अविद्या, अज्ञान, अन्धविश्वास कुरीतियों को नष्ट करने में सक्षम है इसलिए आप सबका उत्तरदायित्व अत्यन्त बढ़ जाता है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम अधिक से अधिक युवाओं को महर्षि दयानन्द और आर्य समाज से परिचित करायें और उनको निकट लाकर अपने सेवा प्रकल्पों से जोड़ें। जन सम्पर्क अभियान को पूरी ताकत के साथ प्रारम्भ करें और आर्य समाज में नये रक्त का संचार करें। अपने आपको जीवन्त और प्राणवान बनाने के लिए संघर्ष की आवश्यकता होती है और संघर्ष से विकास होता है और आन्दोलनों के द्वारा ही जन जागृति समाज में फैलाई जा सकती है। आज आवश्यकता प्रत्येक क्षेत्र में कदम बढ़ाने व फैलाने की है। आप सब अपने-अपने क्षेत्र की आर्य समाजों में समस्या निवारण केन्द्र बनाकर आम लोगों के दु:ख-सुख में शामिल होकर उनकी समस्याओं को सुलझाकर अपने प्रति आकर्षण पैदा कर सकते हैं। अपनी आर्य समाजों को स्वाध्याय संस्कार तथा आध्यात्मिक साधना का केन्द्र बनाने पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करने के लिए आप सबको अपनी गतिविधियों को तेज करना होगा तथा महर्षि के दिखाये मार्ग पर पूरी निष्ठा से अनुसरण करना होगा। अपनी-अपनी सभाओं में विद्वानों, भजनोपदेशकों की सेवायें लेने का भरसक प्रयास करें क्योंकि इन्हीं के प्रयासों से धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक क्रांति की मशाल जलाई जायेगी और देश को सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक प्रदूषण से मुक्त कराया जायेगा। जातिवाद, साम्प्रदायिकता, नशाखोरी, नारी उत्पीड़न आदि बुराइयों से देश को मुक्त करने की प्रेरणा इनसे बेहतर कोई नहीं दे सकता। गांव-गांव में प्रचार-प्रसार के लिए कमर कसनी होगी।

अपने अपने प्रदेशों में चल रहे गुरुकुलों की दशा-दिशा को भी सुधारने की आवश्यकता है अपने थोड़े से प्रयास से हम उन्हें भी आदर्श संस्था के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं। गुरुकुलीय शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा को महत्त्व देकर तथा अन्य सुविधायें प्रदान करवाकर अपने गुरुकुलों को मुख्यधारा में लाया जा सकता है।

अपने-अपने प्रदेशों की आर्य समाजों को सक्रिय करने के लिए विभिन्न स्थानों पर जहां आर्य समाज नहीं है या दूर है वहीं नवीन आर्य समाजों की स्थापना कर पाखण्ड, गुरुडम, अन्धविश्वास के विरुद्ध मोर्चा खोलना हमारे प्राथमिक कार्य में होना चाहिए। ग्रामीण अंचल और दूर-दराज के क्षेत्रों में वेद प्रचार का सघन कार्यक्रम चलाकर सुन्दर और सस्ते ट्रैक्ट वितरित कर आमजनों को अपनी मान्यताओं से परिचित कराना तथा युवाओं और महिलाओं को बड़ी संख्या में आर्य समाज का सदस्य बनाने की आवश्यकता है। महिला चरित्र निर्माण शिविर आदि लगाकर महिलाओं को आर्य समाज में जोड़ा जा सकता है।

आप सभी पदाधिकारी अपने-अपने प्रदेशों में सघन प्रचार कार्य करके और अपने अन्य सेवा प्रकल्पों को बढ़ाकर अपना बहुआयामी स्वरूप जनता के सामने रख सकते हैं। इससे न केवल आर्य समाज को पहचान मिलेगी अपितु इससे सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र के हित में, समाज और राष्ट्र के हित में एक ठोस कदम उठा पायेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी भावनाओं को ध्यान में रखकर आप सभी पदाधिकारी पूर्ण निष्ठा और परिश्रम से आर्य समाज के कार्यों को गति प्रदान करेंगे तथा अपना पूर्ण सहयोग हमें प्रदान करेंगे। अपनी सभी गतिविधियों की जानकारी चित्र सहित हमें भेजें जिसे वैदिक सार्वदेशिक में प्रमुखता से प्रकाशित किया जायेगा।

पृष्ठ–1 का शेष

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग बैठक में लिये गये कई महत्त्वपूर्ण निर्णय

सक्रिय किया जा रहा है। वेदों का प्रकाशन प्रारम्भ हो चुका है और अन्य अच्छी पुस्तकों का प्रकाशन भी शीघ्र किया जायेगा। उन्होंने कहा कि वेदों को हर घर में पहुँचाने का हमारा लक्ष्य है और इसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमने कम से कम मूल्य पर मात्र 2100/- रुपये में वेद सेट देने का निश्चय किया है लेकिन यह विशेष छूट उन्हीं व्यक्तियों को प्राप्त होगी जिनका अग्रिम धन दीपावली तक प्राप्त हो जायेगा। स्वामी जी ने अपील की कि इस महत्त्वपूर्ण कार्य में आप सब बढ़-चढ़कर सहयोग प्रदान करें। जो महानुभाव एक लाख रुपये दान स्वरूप प्रदान करेंगे उनका चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सेट पर प्रकाशित किया जायेगा। उन्होंने श्री लक्ष्मणदास जी आर्य, आचार्य संतराम जी का धन्यवाद किया जिन्होंने एक लाख रुपया वेदों में प्रकाशन हेतु दान स्वरूप प्रदान किया। स्वामी जी ने स्व. स्वामी इन्द्रवेश जी की बहन मूर्तिदेवी जी का भी हृदय से आभार व्यक्त किया जिन्होंने एक लाख 25 हजार रुपये वेद प्रकाशन के लिए प्रदान करने का आश्वासन दिया है। स्वामी चन्द्रवेश जी ने भी एक लाख रुपये से अधिक की धनराशि देने का संकल्प किया है तथा ऋषिपाल आर्य रोहतक ने 21000/- रुपये तथा आर्य समाज सोनीपत ने भी 50 सेट वेदों के लेने का विश्वास दिलाया है उन सबका भी धन्यवाद किया गया।

स्वामी जी की अपील पर अधिवेशन के लिए विभिन्न महानुभावों ने बढ़-चढ़कर आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

इस अवसर पर आर्य सामज के क्रांतिदर्शी संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी भी उपस्थित थे उन्होंने सबको साथ लेकर चलने की अपील की। स्वामी जी ने स्वामी आर्यवेश जी की योजनाओं की भी प्रशंसा की और कहा कि विखरे हुए आर्य समाज को वे अवश्य इकट्ठा कर पायेंगे। उन्होंने देश-विदेश में अपने संस्मरणों को साझा करते हुए कहा कि आर्य समाज की मान्यताओं और महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के साथ यदि हम दुनिया को जोड़ें तो यह बहुत बड़ी बात होगी। स्वामी जी ने कहा कि विभिन्न मत, पंथों की सभाओं में जाकर मैं पूरी प्रखरता से आर्य समाज के सिद्धान्तों का पक्ष रखता हूँ। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं को अपने साथ जोड़ने का प्रयास करें चाहें वे किसी भी गुट के क्यों न हों। स्वामी जी के अत्यन्त व्यवहारिक तथा सभा को शक्ति देने वाले विचारों से सभा भवन मन्त्र मुग्ध हो गया।

इस अवसर पर सभामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द जो क्रांति लाना चाहते थे वह आज भी अधूरी है हम सबको सहयोगात्मक दृष्टि अपनाकर आर्य समाज की न केवल नई पहचान बनानी है बल्कि आम जनता में आर्य समाज के सिद्धान्तों, मन्तव्यों को पूरी ताकत के साथ पहुँचाना है उन्होंने कहा कि समय आ गया है कि पूर्ण निष्ठा और परिश्रम से हम सब मिलकर आर्य समाज को गति प्रदान करें तथा समाज में फैले धार्मिक पाखण्ड भ्रष्टाचार तथा महिलाओं पर हो रहे अन्याय के विरुद्ध एकजुट होकर आवाज बुलन्द करें।

इस अवसर पर सभा कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी, श्री सत्यव्रत सामवेदी, स्वामी रामवेश, श्री राम सिंह आर्य, श्री विरजानन्द, डॉ. अनिल आर्य, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, आर्य समाज देवनगर के प्रधान श्री नफे सिंह देशवाल जी, आनन्द प्रकाश आर्य-हापुड़, श्रीमती गायत्री मीना-नोएडा, प्रो. श्योताज सिंह, श्री मामचन्द्र रिवाड़िया आदि ने भी अपने विचार प्रकट किये तथा स्वामी आर्यवेश जी को पूर्ण सहयोग देने की घोषणा की।

thearyasamaj.org

आर्य समाज को शक्तिशाली बनाने के लिए ऋषि भक्त एकजुट हों

– स्वामी आर्यवेश

संस्कारित एवं देशभक्त युवकों का निर्माण करेगा, आर्य समाज

–डा. अनिल आर्य

समाज में फैली हर बुराई को दूर करने का काम आर्य समाज करे

– पं. माया प्रकाश त्यागी

गाजियाबाद । रविवार, 24 अगस्त 2014, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् उतर प्रदेश एवं आर्य समाज चन्द्रपुरी के तत्वावधान में आर्य समाज, चन्द्रपुरी के पार्क, नवयुग मार्किट में आयोजित " वैदिक धर्म दीक्षा अभियान के अंतर्गत युवा यज्ञोपवीत संस्कार समारोह" में 101 युवक, युवतियों ने यज्ञोपवीत धारण किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। उन्होंने कहा कि धर्म समाज को जोड़ता है तोड़ता नहीं, वैदिक धर्म सर्वे भवन्तु सुखिनः की बात करता है । पारिवारिक सद्भावना के बिना जीवन सफल नहीं हो सकता, समाज का उत्थान - राष्ट्र का उद्धार नहीं हो सकता। श्रेष्ट संस्कारों से ही युवा पीढी उत्थान के शिखर पर पहुँच सकती है। स्वामी आर्यवेश ने घोषणा की कि 25000 वेदों के सैट छाप कर लागत मूल्य पर घर-घर में पहुँचाकर वेद का प्रचार-प्रसार किया जायेगा। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज का विखराव अत्यन्त घातक है आर्य समाज के लोग संगठित होकर देश समाज की भरपूर सेवा कर सकते हैं। संगठन में बहुत बड़ी शक्ति होती है और हम इसके लिए हर सम्भव प्रयास कर रहे हैं। गुटबाजी से ऊपर उठकर हम सब आर्य समाज को उन्नत करने में पूर्ण निष्ठा से जुट जायें क्योंकि आज समाज बुराइयों के मकड़जाल में बुरी तरह फंसा हुआ है इस कठिन परिस्थिति में आर्य समाज के ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है और हम सबको मिलकर इसे निभाना है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने अपने सन्देश में कहा कि हिन्दू समाज संगठित हो तभी देश सुरक्षित रह सकता है । चरित्रवान युवक ही राष्ट्र विरोधी ताकतों का मुकाबला कर सकते हैं क्योंकि चारित्रिक बल सबसे बडा बल होता है। युवकों को जीवन में समयबद्धता, अनुशासन, माता-पिता के आज्ञाकारी, आत्मविश्वास, संकल्पवान और देशभक्त होना चाहिये। ऐसे देशभक्त युवकों का युवक परिषद् निर्माण करती है। चरित्र निर्माण राष्ट्र की सबसे बडी आवश्यक्ता है।

यज्ञ के ब्रह्मा भगवानदेव शास्त्री ने कहा कि यज्ञ से त्याग व उपकार की भावना जागृत होती है। यज्ञोपवीत हमारी पुरातन गौरवशाली संस्कृति का आधार है। समारोह में सैंकड़ों आर्य जनों ने भाग लेकर महर्षि दयानन्द के पदचिन्हों पर चलने, नशा मुक्त समाज की स्थापना करने एवं बीडी-सिग्रेट, अण्डा-मांस, शराब तथा गुटके से दूर रहने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर ध्वजारोहण आर्यनेता सुनील गर्ग, प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा, गाजियाबाद द्वारा किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,दिल्ली के कोषाध्यक्ष श्री मायाप्रकाश त्यागी ने अपने उद्बोधन में कहा कि सदा से ही युवा पीढी समाज सुधार करती आई है। आज भी करना होगा। समाज में फैली हर बुराई को दूर करने का बीडा उठाना होगा। अब चाहे वे बुराइयाँ देहिक हों, देविक हों, सामाजिक हों, मानसिक हों भौतिक हों या फिर राजकीय हों। आज-कल के युवको को हम शिक्षा तो दे रहे हैं पर दिशा नहीं। आज युवकों को सही दिशा का ज्ञान, अपने कर्तव्यों का ज्ञान अपनी सांस्कृतिक धरोहर और भावी पीढी के उत्तरदायित्व को उठाने का ज्ञान सुचारू रूप से होना बहुत आवश्यक है। आर्य समाज के इन्हीं कार्यक्रमों के माध्यम से ही आज का युवक संस्कारवान हो सकता है।

समारोह के विशिष्ट अतिथि स्वदेशी फार्मेसी के निदेशक डा. आर. के. आर्य ने कहा कि आज कन्या भ्रूण हत्या की समस्या बढ़ती जा रही है जो कि देश के लिए चिन्ता जनक है, हमें इसकी गम्भीरता को समझना चाहिए और साथ ही आज फिर समाज में पाखण्ड और अन्ध विश्वास बढ़ रहे हैं जिसका भोले भाले लोग शिकार हो जाते हैं आर्य जनों को चाहिए कि वह समाज से इन बुराईयों को दूर करने के लिए मैदान में आगे आयें।

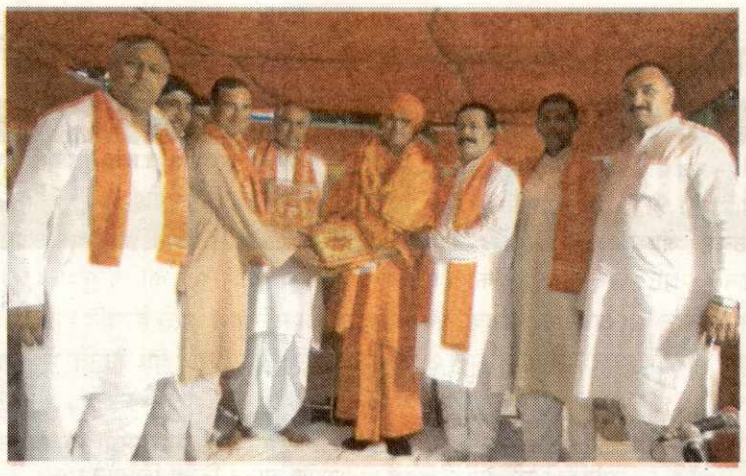

आचार्य सतीश सत्यम, पं. हीराप्रसाद शास्त्री दिल्ली, दीनानाथ नागिया एवं साथी कलाकारों के द्वारा गाये मधुर भजनों ने श्रद्धालुओं को झुमा दिया।

समारोह अध्यक्ष प्रमोद चौधरी, प्रधान आर्य समाज वृन्दावन गार्डन ने कहा कि व्यक्ति का निज जीवन समाज के लिए आदर्श होना चाहिए आपके जीवन को देख कर ही व्यक्ति आपके अनुगामी बनेंगे। उपनयन का अर्थ है समीपता को प्राप्त करना। आचार्य की सामीप्यता प्राप्त करके बालक शिक्षा द्वारा अपने जीवन को समुन्नत करता है। शिक्षा व्यक्ति को काम करने में समर्थ बनाती है। उपनयन संस्कार मानव निर्माण की आधारशिला है। यज्ञोपवीत के 3 धागे स्वजीवन को समुन्नत बनाना तथा राष्ट्र के लिये भावी सन्तति को समुन्नत बनाकर देने के व्रत के प्रतीक हैं। प्रत्येक भारतीय का यह संस्कार होना चाहिये जिससे राष्ट्र में सद्चरित्र, शिक्षित नागरिक उपलब्ध हो सकें।

आर्य युवा नेता प्रवीन आर्य ने कहा कि आर्य समाज का देश की आजादी में महत्वपूर्ण योगदान रहा है, अब आर्य जनों को राष्ट्र की रक्षा के लिए तैयार रहना पड़ेगा। एक विशेष सूचना देते हुये उन्होने कहा राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन रविवार, 7 सितम्बर 2014, प्रातः 9 से सायं 5 बजे तक योग निकेतन सभागार, 30 ए, रोड नं0 78, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली-110026 मे होगा। जिसमें गाजियाबाद से सैकड़ों आर्यजन बढ-चढ कर भाग लेंगे।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नन्दग्राम-शाखा के युवक-युवतियों द्वारा भव्य योग, व्यायाम एवं शारीरिक शक्ति प्रदर्शन किया गया, जिसकी दर्शकों ने बहुत प्रशंसा की ।

समारोह का कुशल संचालन महामंत्री प्रवीन आर्य ने किया। समारोह को सफल बनाने में सौरभ गुप्ता, संजीव आहुजा, सुरेश प्रसाद, त्रिलोक उमराव शास्त्री, राहुल आर्य, आशीष सिंह, अश्वनी बत्रा, राजेन्द्र, नरेन्द्र आर्य, राजकुमार शास्त्री आदि का विशेष योगदान रहा। इस अवसर पर मुख्य रूप से सर्वश्री श्रद्धानन्द शर्मा, राकेश शर्मा, के. के. यादव, रामकुमार आर्य, सूरज जुनेजा, पूनम गर्ग, महेन्द्र कुमार सिंघल, सुभाष सिंघल, तेजपाल सिंह, सुरेन्द्र नागर, के. के. यादव, सुरेश आर्य, अजय पथिक, बीर सिंह, संतलाल, रामकिशोर शास्त्री, अनुपम गोयल, दीपा गोयल, आदि उपस्थित रहे।

-प्रवीन आर्य , महामन्त्री, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् उतर प्रदेश, फोनः 9911404423

आर्य उप–प्रतिनिधि सभा, जनपद गाजियाबाद का वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न

गाजियाबाद, 24/08/2014 , आज आर्य उप-प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन (चुनाव) श्री दयानन्द बाल विद्यालय साधना मन्दिर, पटेल मार्ग, गाजियाबाद में श्री ओमप्रकाश आर्य, चुनाव अधिकारी तथा श्री जयपाल सिंह आर्य, प्रधान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री श्रद्धानन्द शर्मा जी को प्रधान, श्री ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य जी को मन्त्री तथा श्री सुरेन्द्र पाल सिंह जी को कोषाध्यक्ष सर्वसम्मति से निरविरोध वर्ष 2014-15 हेतु निर्वाचित घोषित किया गया।निर्वाचन में 45 आर्य समाजों के 153 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर मुख्य रूप से सर्वश्री मायाप्रकाश त्यागी, आर. डी. गुप्ता, सुभाष सिंघल, सत्यवीर चौधरी, तेजपाल आर्य, नेतराम आर्य, सुनील गर्ग, वीर सिंह आर्य, प्रवीण आर्य, फूल चन्द यादव, वी. के. बहुगुणा, ओमेन्द्र आर्य, त्रिलोक उमराव, बबली कसाना, वन्दना चौधरी, प्रतिभा सिंघल आदि उपस्थित रहे।

- ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य, मन्त्री, आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, गाजियाबाद, मो.:-09899845141

thearyasamaj.org

शरीर मन के नियंत्रण पर चलता है

मन और शरीर ऊपर से देखने में दो अलग-अलग वस्तुएँ प्रतीत होती हैं, पर वस्तुत: इनमें किसी प्रकार का भेद नहीं है। केवल रूप में भिन्नता है। विशुद्ध रूप से इन दोनों का अस्तित्व एक-दूसरे पर टिका हुआ है। मन शरीर के बिना कुछ कर नहीं सकता और शरीर मन के बिना किसी भी कार्य को कर सकने में असमर्थ होता है। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि शरीर और मन का एक-दूसरे से कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है।

शरीर मन की रक्षा करने वाला ऊपरी आवरण है। इस जड़ शरीर का निर्माण जड़ और चेतन तत्त्वों के मिश्रण से हुआ है, उन्हीं तत्त्वों के सूक्ष्म और अदृश्य स्वरूप से हमारे सूक्ष्म शरीर की रचना हुई है। अत: शरीर और मन में मात्र इतनी ही भिन्नता है कि एक दृश्य है और दूसरा अदृश्य, एक स्थूल है दूसरा सूक्ष्म। उदाहरणार्थ - पानी का साधारण रूप जड़ है और उसका दूसरा रूप सूक्ष्म है जो दिखाई नहीं पड़ता है, जिसे हम भाप कहते हैं। जिस प्रकार पानी और भाप के स्वरूप में भिन्नता भर है, गुण दोनों के समान हैं, उसी प्रकार सूक्ष्म और स्थूल शरीर के बारे में भी है। स्वरूप में भिन्नता है, गुण दोनों के ही समान हैं। मन में विचार उत्पन्न होते हैं। शरीर उन्हें क्रियारूप में परिणत कर देता है। मनुष्य के मन में उदित होने वाले विचार शरीर को प्रभावित करते हैं। उससे प्रभावित होकर ही व्यक्ति का शरीर क्रियाशील बनता है। प्राय: लोगों को ऐसा कहते सुना जाता है कि 'मेरा मन ठीक नहीं है' इस समय हम काम नहीं कर सकते हैं। कारण कि मन दुखी, चिंतित एवं असंतुष्ट होता है तो उसका प्रभाव हमारे शरीर पर भी पड़ता है।

मनुष्य वर्तमान समय में जो कुछ भी है अपने मन में निहित विचारों के ही कारण है। मन में व्यक्ति जिस बात का विचार कर लेता है, वैसा ही आचार-व्यवहार करता है फलत: उसका जीवन उसी ढांचे में ढल जाता है, जब कभी हमारे ऊपर कोई विपत्ति आ पड़ती है तो हम उसका पूरी तरह से सामना करते हैं तथा सफल हो जाते हैं। ऐसे ही क्षणों में मन की उस दिव्य एवं अमोघ शक्ति का हमें आभास होता है। यह विराट शक्ति सबके अन्दर सुप्तावस्था में विद्यमान रहती है। इसकी तुलना हम पत्थर में छिपी हुई अग्नि से कर सकते हैं। उसे हम कुछ प्रयत्न एवं पुरुषार्थ करके जला सकते हैं। मन की इसी प्रचंड शक्ति के सहारे मनुष्य बड़ी-बड़ी कठिनाइयों को पार कर जाता है और कभी-कभी तो इतने बड़े-बड़े काम कर दिखाता है कि जिसकी कभी आशा भी नहीं की जा सकती थी।

कार्य के प्रति सच्चा प्रेम मन में उत्पन्न हो जाए तो व्यक्ति निठल्ले बैठे रहना पसंद न करेगा। आलसी और दरिद्री लोग बेकार पड़े रहने में सुख अनुभव करते हैं, किन्तु काम-काजी वास्तविक कार्य करने में ही सुख पाते हैं। कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों के जीवन में ऐसे अनेक अवसर उत्पन्न होते हैं कि यदि आलसियों के जीवन में ये अवसर आ जाएँ तो वे बीमार ही पड़ जाएँ, किन्तु कर्मठ व्यक्तियों के मन और शरीर पर उनकी कर्त्तव्यपरायणता के कारण इन साधारण कष्टों का कुछ असर नहीं पड़ता है।

घर में आग लग जाने के कारण अपना बचाव करने के लिए कई महीनों से बीमार पड़ा हुआ व्यक्ति उठकर भाग निकलता है। रोगी में यह विलक्षण परिवर्तन उसके अंदर छिपी हुई शक्ति के कारण होता है। उसी अद्भुत शक्ति से प्रेरित होकर व्यक्ति दुरुह कार्यों को भी कर दिखाता है। जब तक कोई कठिन परिस्थिति नहीं होती है, तब तक उसे अपनी सहनशीलता एवं सामर्थ्य का सही अनुमान नहीं लग पाता।

कई भयंकर रोगियों की स्थिति देखकर देखने वाला यह सोचने लगता है कि न जाने इसके प्राण कहाँ रुके हुए हैं। इस कठोर यातना को वह कैसे सह रहा होगा, किन्तु जब ऐसी स्थिति उसकी हो जाती है तो वह जैसे-तैसे उसे सहन कर लेता है। अभिप्राय यह है कि मनुष्य सशक्त मन के द्वारा शरीर से हर कठिनाई का सामना कर लेता है। मन में जिस तरह के विचार उठते हैं, शरीर पर उनका ही प्रभाव पड़ता है। मन रोगी है तो शरीर भी रोगी हो जाता है। भावी संकट की कल्पना मात्र करके मनुष्य इतना भयभीत हो जाता है कि उसकी सारी शक्तियाँ शिथिल पड़ जाती हैं, यह सब उसकी मन की दुर्बलता का द्योतक है। मन की दुर्बलता ही व्यक्ति के शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुख का नाश करती है। विपत्ति जितनी ज्यादा भयानक नहीं होती, उससे अधिक मन की अस्त-व्यस्तता हमें दुखी एवं असंतुष्ट बना देती है। मनुष्य जो कुछ भी अच्छा-बुरा कार्य करता है वह सब सूक्ष्म शरीर की अकथनीय एवं अज्ञात शक्ति से प्रेरित होकर ही करता है।

मन में उत्पन्न हुई शक्ति से शरीर कार्य करता है। शरीर में कभी कोई कष्ट होता भी है, किन्तु मन उत्साह एवं प्रसन्नता से पूरित होता है, तब शारीरिक कष्ट भी थोड़ी देर के लिए विस्मृत हो जाते हैं। हम उस अमोघ शक्ति का नाश करते जा रहे हैं जो दु:खों, रोगों एवं विपत्तियों में भी धैर्यपूर्वक सामना करने की हमें प्रेरणा देती है। यह शक्ति जब मन से प्रस्फुटित होती है, तभी शरीर उसके सहारे कार्य कर दिखाता है। व्यक्ति अनेक समस्याओं से उलझा हुआ मन में चिंतित रहता है और इसका असर उसके शरीर पर पड़ता है। मन खिन्न है तो शरीर पर उसका असर अवश्य पड़ेगा। आवश्यकता इस बात की है कि शरीर और मन के अविच्छिन्न सम्बन्ध के विषय में ध्यान रखते हुए मन को शुद्ध एवं संतुलित रखें। तभी हम स्वस्थ्य रह सकेंगे और मन की दिव्यशक्ति के सहारे प्रगतिशील बन सकेंगे।

मनुष्य ईश्वर की सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। उसकी रचना में उसने अपना सारा कौशल लगा डाला है, इतना ही नहीं, सुखी एवं समृद्धि बनाने वाली शक्ति भी प्रदान की है। जिसके सहारे मनुष्य दु:ख-कष्ट की ज्वाला को मनरूपी प्रचंड शक्ति के माध्यम से शांत करता चलता है। जीवन को दिव्य से दिव्यतम बना देने की शक्ति इसी के अन्दर छिपी रहती है।

मनुष्य के शरीर के अंदर सभी सुख-सुविधा एवं प्रगति के साधन छिपे हुए हैं। मनुष्य को सुख बाहरी किसी वस्तु में नहीं मिल सकता है, वह तो तभी मिल सकता है, जब वह अपनी आंतरिक शक्ति से परिचित हो। उन साधनों के उपयोग से वह स्वास्थ्य सुख एवं शांति प्राप्त कर सकता है। यह मार्ग प्रत्येक व्यक्ति के लिए खुला हुआ है। मनुष्य के अंदर एक दैवी शक्ति निवास करती है। यदि यह शक्ति विकसित हो जाए तो शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के दु:ख खत्म हो जाते हैं।

गीता में कहा गया है - "मन ही मनुष्य के बंधन और मोक्ष का कारण है।" व्यक्ति का मन अगर भवबंधनों अर्थात् काम-क्रोध, मद-लोभ, दंभ-दुर्भाव, दोष आदि पर विजय प्राप्त कर लेता है तो वही मोक्ष की स्थिति होती है, तभी बंधनों से व्यक्ति छुटकारा पा जाता है। हमारा मन ही बंधन का कारण है, क्योंकि हमारे मन में दूषित विचारों का बाहुल्य हो तो शरीर भी अवांछनीय कार्यों को करेगा और फलस्वरूप दु:ख भोगने पड़ेंगे, शरीर मन की प्रेरणा से कार्य करता है। मन में विचार उत्पन्न न हों तो शरीर तो जड़ वस्तु है, वह कैसे कोई कार्य कर सकता है।

शरीर और मन के अटूट संबन्ध पर विचार करते हुए हमें अपने अंदर छिपी हुई मन:शक्ति को जानना चाहिए। जो कि हमारे शरीर को नियंत्रण में रखती है और दिव्य एवं आलौकिक बनाने में सहायक सिद्ध होती है।

-युग निर्माण योजना से साभार

सावधान ! सावधान !! सावधान !!!

सेवा में,

समस्त भारतवर्ष की आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं एवम् आर्य भाइयों के लिए आवश्यक सन्देश

विषय : क्या आप 100% शुद्ध हवन सामग्री का प्रयोग करते हैं?

आदरणीय महोदय,

क्या आप प्रातःकाल एवम् सायंकाल अथवा साप्ताहिक यज्ञ अपने घर अथवा अपने आर्यसमाज मन्दिर में करते हैं?यदि "हाँ" तो यज्ञ करने से पहले जरा एक दृष्टि ध्यान से, आप जो हवन सामग्री प्रयुक्त करते हैं, उस पर डाल लीजिए। कहीं यह 'घटिया' हवन सामग्री तो नहीं अर्थात् मिलावटी, बिना 'आर्य पर्व पद्धति' से तैयार तो नहीं?इस घटिया हवन सामग्री द्वारा यज्ञ करने से लाभ की बजाय हानि ही होती है।

जब आप घी तो 100% शुद्ध प्रयोग करते हैं, जिसका भाव 250/- से 300/- रुपये प्रति किलो है तो फिर हवन सामग्री भी क्यों नहीं 100% शुद्ध ही प्रयोग करते हैं?क्या आप कभी हवन में डालडा घी डालते हैं?यदि नहीं तो फिर 'अत्यधिक घटिया' हवन सामग्री यज्ञ में डालकर क्यों हवन की भी महिमा को गिरा रहे हैं?

अभी पिछले 26 वर्षों में लगभग भारत की 75% आर्यसमाजों में गया तथा देखा कि लगभग सभी आर्य समाजें व आर्यजन सस्ती से सस्ती हवन सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं। कई लोगों ने बताया कि उन्हें मालूम ही नहीं है कि असली हवन सामग्री क्या होती है?तथा हम तो कम से कम भाव पर जहां भी मिलती है वहीं से मंगवा लेते हैं।

यदि आप 100% शुद्ध उच्च स्तर की हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं तो मैं तैयार करवा देता हूँ यह बाजार में बिक रही हवन सामग्री से महंगी तो अवश्य पड़ेगी परन्तु बनेगी भी तो 'देशी' हवन सामग्री अर्थात् जिस प्रकार 100% शुद्ध देसी घी महंगा होता है उसी प्रकार 100% शुद्ध हवन सामग्री भी महंगी पड़ सकती है। आज हम लोग मंहगाई के युग में जो 14 से 35 रुपये प्रति किलो तक की हवन सामग्री खरीद रहे हैं वह निश्चित रूप से मिलावटी है क्योंकि 'आर्य पर्व-पद्धति' अथवा 'संस्कारविधि' में जो वस्तुएँ लिखी है वे तो बाजार में काफी महंगी हैं।

आप लोग समझदार है तो फिर बिल्कुल निम्न कोटि की घटिया हवन सामग्री क्यों प्रयोग करते चले आ रहे हैं?घटिया हवन सामग्री प्रयोग कर आप अपना धन और समय तो खो ही रहे हैं साथ ही साथ यज्ञ की महिमा को भी गिरा रहे हैं और मन ही मन प्रसन्न हो रहे है कि आ हा ! यज्ञ कर लिया है।

भाइयों और बहनों! और पूरे भारतवर्ष की आर्यसमाजों के मंत्रियों और मन्त्रिणियो ! अब समय आ चुका है कि हमें जाग जाना चाहिए आप लोगों के जागने पर ही यज्ञ का पूरा लाभ आपको मिल सकेगा।

यदि आप लोग मेरा साथ दें तो मैं आप लोगों को वास्तव में वैदिक रीति के अनुसार ताजा जड़ी-बूटियों से तैयार करवाकर उच्च स्तर की 100% शुद्ध देशी हवन सामग्री जिस भाव भी मुझे पड़ेगी, उसी भाव पर अर्थात् 'बिना लाभ बिना हानि' सदैव भेजता रहूँगा। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप लोग मेरा साथ देंगे तथा यज्ञ की गरिमा को बनाए रखेंगे।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

देवेन्द्र कुमार आर्य

विदेशों एवं समस्त भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त

(सुप्रसिद्ध हवन सामग्री विशेषज्ञ)

हवन सामग्री भण्डार

631/39, ओंकार नगर-सी, त्रिनगर, दिल्ली-110035 (भारत)

मों. : 9958279666, 9958220342

नोट : 1. हमारे यहां लोहे, तांबे एवं टीन की नई चादर से विधि अनुसार बने हुए सुन्दर व मजबूत विभिन्न साइजों के हवन-कुण्ड (स्टैण्ड सहित), सर्वश्रेष्ठ गुग्गुल, शुद्ध असली देशी कपूर, असली सफेद/लाल चन्दन पाउडर, असली चन्दन समिधा एवं तांबे के यज्ञपात्र भी उपलब्ध हैं।

2. सभी आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे लगभग जिस भाव की भी हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं वह भाव हमें लिखकर भेज दें। हमारे लिए यदि सम्भव हुआ तो उनके लिखे भाव अनुसार ही हम बिल्कुल ताजा व बढ़िया से बढ़िया हवन सामग्री बनाकर भेजने का प्रयास कर देंगे। आदेश के साथ आधा धन अग्रिम मनीआर्डर से भेजें।

thearyasamaj.org

आर्य समाज की गतिविधियाँ

ईश्वरीय ज्ञान चारों वेदों की ऑडियो डी.वी.डी. मनुष्य मात्र के लिये उपलब्ध

10 या इससे अधिक सैट मंगाने पर 50 प्रतिशत की विशेष छूट का लाभ उठायें

परमात्मा ने अपने ज्ञान को सभी मनुष्यों के कल्याण के लिये श्रुति रूप में दिया, जो कि लम्बे कालान्तर के पश्चात् पुनः ऑडियो डी०वी०डी० (श्रुति) रूप में प्रस्तुत किया गया हैं।

चारों वेदों के बीस हजार चार सौ अठ्ठाईस (20,428) मंत्रों को हिन्दी में अर्थ और उनके भावार्थ सहित 362 घण्टे की 8 डी०वी०डी० में डाला गया है।

मंत्रों के साथ उनके देवता, ऋषि, छन्द एवं स्वर भी दिये गये हैं। सभी मंत्रों का शुद्ध एवं सस्वर पाठ किया गया है तथा साथ ही संगीत भी दिया है। 8 डी०वी०डी० के एक सेट की सहयोग राशि 1000 रू. है। 8 डी०वी०डी० के दस या दस से अधिक सेट मंगाने पर 50 प्रतिशत की छूट के साथ 500 रू. प्रति सेट में दिया जा रहा है। डाक व्यय इसके अतिरिक्त होता है।

हमारा लक्ष्य व्यापार करना न होकर वेदों को भारतीय प्रान्तीय भाषाओं एवं विश्व के देशों की प्रमुख भाषाओं में अनुवादित करके फिर श्रुतिरूप में करोड़ों लोगों तक पहुंचाना है।

अतः इस पुनीत कार्य में अपना सहयोग कीजिये और आज ही अपने लिये और दूसरों तक वेदों का ज्ञान पहुंचाने के लिये अधिक से अधिक सैट मंगाने का निम्न सम्पर्क सूत्रों पर आदेश कीजिये।

साहित्य विभाग

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
फोन: 011–23274771, 23260985

सर्व धर्म संसद
7, जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली–1
फोन: 011–23367943, 23363221

ईमेलः sarvadeshikarya@gmail.com
विश्वम्आर्यम स्प्रिचुअल डी.वी.डी., प्रा. लि. 302, पंचशील गली नं. 1 गढ़ रोड़ मेरठ (उ. प्र.)
www.vishvamaryam.com info@vishvamaryam.com
Mob. +91-8755280038

ऋग्वेदीय बृहद् यज्ञ एवं निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर

शुक्रवार दिनांक 26 सितम्बर से बृहस्पतिवार दिनांक 2 अक्टूबर, 2014 तक

सानिध्य पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी मुख्याधिष्ठाता आश्रम

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के 48वें स्थापना दिवस एवं वार्षिकोत्सव के अवसर पर भव्य कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

योगनिर्देशक एवं यज्ञ ब्रह्मा : डॉ. स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, पातंजल योगधाम, ज्वालापुर, हरिद्वार के अतिरिक्त आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान पधार रहे हैं।

कार्यक्रम समय : प्रातः 5 से 6 बजे तक ध्यान, 6 से 7 बजे तक यौगिक क्रियाओं का प्रशि[illegible]तः 8 से 11 बजे तक : यज्ञ-भजन-उपदेश, [illegible] 3 से 6 बजे यज्ञ-भजन-उपदेश, रात्रि 8 से 10 तक भजनोपदेश और व्याख्यान तथा मल्टीमीडिया हॉल में धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन, आर्य महिला जागृति सम्मेलन : मंगलवार 30 सितम्बर सायं 3 बजे से। योग सम्मेलन : बुधवार 1 अक्टूबर प्रातः 10 बजे से, चरित्र निर्माण सम्मेलन : बुधवार 1 अक्टूबर सायं 3 बजे से, पूज्य आत्मस्वामी जन्मोत्सव एवं आश्रम स्थापना दिवस समारोह गुरुवार दिनांक 2 अक्टूबर, 2014 यज्ञ पूर्णाहुति प्रातः 9 बजे तत्पश्चात् स्थापना दिवस समारोह। आर्य समाजों के अधिकारी एवं व्यक्तिगत यजमान बनने के इच्छुक इस शुभ अवसर पर सादर आमंत्रित हैं।

– वानप्रस्थी ईशमुनि, संयोजक,
मो.:-9812640989

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का 36वाँ वार्षिक अधिवेशन एवं राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन

रविवार 7 सितम्बर, 2014 प्रातः 9 से 5 बजे तक

स्थान : योग निकेतन सभागार, 30ए, रोड नं.–78 पश्चिमी पंजाबी बाग, नई दिल्ली–26

(स्वामी योगेश्वरानन्द जी की तपोस्थली)

राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं में आर्य समाज की भूमिका पर विचार देशभर के चुने हुए आर्य युवा प्रतिनिधियों का भव्य समागम।

यज्ञ : प्रातः 9 से 10 बे तक, अल्पाहार 10 से 10.45 तक, ऋषि लंगर 1 से 2 तक।

इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा नेतागण पधार रहे हैं। आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

– निवेदक- डॉ. अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष, के. आ. यु. परिषद्, मो.:- 9810117464

वेद प्रचार सप्ताह का भव्य कार्यक्रम

आर्य समाज खलासी लाईन, सहारनपुर में श्रावणी महोत्सव वेद प्रचारसप्ताह 10 से 17 अगस्त के समापन समारोह में अंतिम दिवस पर यज्ञ हुआ। यज्ञ वैदिक विद्वान आचार्य धीरज कुमार जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। आचार्य जी ने यज्ञ के बाद श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कहा सफलता के लिए भौतिकता व आध्यात्मिकता में समन्वय जरूरी है एक की पराकाष्ठा व दूसरे की उपेक्षा का परिणाम अवसाद ग्रस्तता ही निकलेगा।

आचार्य जी ने विवाह पूर्व गुण–कर्म–सवभाव के मिलान की प्रेरणा दी और कुंडली आदि के मिलान की प्रथा को अनुचित बताया। तत्पश्चात् वैदिक विद्वान श्री अनुज शास्त्री जी ने अपने प्रवचन में कहा कि श्री कृष्ण योगेश्वर थे उन्हें भोगेश्वर स्थापित करना गलत है वे योगी थे भोगी नहीं।

तत्पश्चात् वैदिक भजनोपदेशक विनोद दधीचि जी ने भजनों के माध्यम से वेदाचरण वेदों के आचरण करने की प्रेरणा देते हुए कहा तूझको मानव बनाया था क्या बन गया है पूर्व जन्मों का फल था जो तूझको मिला, वेद के ज्ञान से तूने जीवन को अपने क्यों संवारा नहीं। ये माता–पिता तेरा आधार हैं, इनकी तन–मन–धन से सेवा तू कर, वरना जीवन तेरा ये बेकार है। तत्पश्चात् शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– सुरेश सेठी–आय–व्यय निरीक्षक, आर्य समाज खलासी लाईन, सहारनपुर, दूरभाष–9358320222

आर्य समाज आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम, नोएडा में श्रावणी महोत्सव चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ एवं नव प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार

शनिवार, 30 अगस्त से रविवार 31 अगस्त, 2014

स्थान – आर्य समाज, बी–69 सैक्टर–33 नोएडा, दूरभाष :– 0120–2505731, 4348731

कार्यक्रम

प्रातः ए–30 से 9.30 बजे तक चतुर्वेद शतक यज्ञ, ब्रह्मा डॉ. जयेन्द्र कुमार, ऋत्विक श्रीमती गायत्री मीना आर्या एवं मोहन प्रसाद, वेद पाठ–आर्ष गुरुकुल नोएडा के ब्रह्मचारियों द्वारा, सायं 5 से 7 बजे तक यज्ञ प्रवचन, आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार, रविवार 31 अगस्त, 2014 को प्रातः 9 से 10 बजे तक नव प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार (आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा)। मुख्य समारोह प्रातः 8 से 12.30 बजे उपनयन संस्कार/भजन/उपदेश।

अध्यक्ष – श्री एच. पी. परिहार (सुप्रसिद्ध सामजसेवी), मुख्यअतिथि – श्री प्रवीण मल्होत्रा (निपमैन फास्टनर इन्डस्ट्रीज), गरिमामयी उपस्थिति – श्री अनिल शास्त्री (पूर्व सांसद), विशिष्ट अतिथि – श्री आनन्द चौहान (ए. के. सी. ग्रुप ऑफ कम्पनीज़)।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के नव–निर्वाचित प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का विशेष अभिनन्दन किया जायेगा।

– निवेदक – गायत्री मीना–प्रधान, कैप्टन अशोक गुलाटी–मन्त्री

आर्य जगत् के योगनिष्ठ संन्यासी, वैदिक विद्वान, समर्पित व सरल व्यक्तित्व पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी के 75वें जन्मोत्सव पर राष्ट्रीय स्तर पर राजधानी दिल्ली में अमृत महोत्सव एवं अभिनन्दन समारोह

रविवार 16 नवम्बर, 2014, प्रातः 10 से 2 बजे तक

स्थान : योग निकेतन, रोड नं.–78, पश्चिमी पंजाबी बाग, नई दिल्ली–26

आर्य समाज के समस्त संन्यासी, विद्वान, नेता एवं पदाधिकारी इस अवसर पर स्वामी दिव्यानन्द जी को शुभकामनायें प्रदान करेंगे तथा यथेष्ट सम्मान राशि, शॉल, श्रीफल एवं सम्मान पत्र भेंट कर उनका सार्वजनिक अभिनन्दन करेंगे।

अपील : स्वामी दिव्यानन्द जी को सम्मान स्वरूप इस अवसर पर एक थैली भेंट की जायेगी जिसके लिए आप अपना सहयोग क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा '**स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती अभिनन्दन समिति**' के नाम से निम्न पते पर भिजवाने की कृपा करें। आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती अभिनन्दन समिति
मुख्यालय : पातंजल योगधाम, आर्यनगर, ज्वालापुर, हरिद्वार-249407 (उत्तराखण्ड)
शाखा कार्यालय : "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2
दूरभाष : 011'23274771, 23260985,
ई-मेल :- sarvadeshik@gmail.com, aryayouth@gmail.com

thearyasamaj.org

NDPSo on 29/30 अगस्त, 2014
प्रकाशन की तिथि : 28 अगस्त, 2014

वैदिक सार्वदेशिक   28 अगस्त से 03 सितम्बर 2014

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रकृति माता का अद्‌भुत चमत्कार

एकः सुपर्णः स समुद्रमा विवेश स इदं विश्वं भुवनं वि चष्टे।
तं पाकेन मनसापश्यमन्तितस्तं माता रेहि स उ रेमातरम्।।

—ऋ० १०/११४/४

ऋषिः—सध्रिवैरूपो घर्मो वा तापसः।। देवता—विश्वेदेवाः।। छन्दः—जगती।।

विनय—संसार में आया हुआ जीव क्या है?यह एक सुपर्ण पक्षी है जो अन्तरिक्ष-समुद्र में विहार करने आया हुआ है। यह अपने ज्ञान और कर्म के पंखों से इधर-उधर उड़ता हुआ इस सब भुवन को विविध प्रकार से देखने का आनन्द ले-रहा है। संसार-सागर में मनोमयादि सूक्ष्म संसारान्तरिक्ष में एक योनि से दूसरी योनि में भोग भोगने के लिए फिरता हुआ और वहां विविध प्रकार के भगों को प्राप्त करता हुआ यह जीव गति कर रहा है, उड़ रहा है। अभी तक जीव को मैं इसी संसाराकाश के विकारी सुपर्ण के रूप में देखता रहा हूँ, पर आज समीपता से देखा है, ज्ञानपरिपक्व हुए मन से इसे समीपता से देख रहा हूँ, तो इस जीव-प्रकृति-संयोग को मैं और ही रूप में देख रहा हूँ कि माता उसे चूम रही है और वह माता को चाट रहा है। प्राकृति माता मैं कहूंगा परमेश्वरी प्रकृति-जीव से प्रेम कर रही है और जीव इस माता से सुख पा रहा है। जीव के प्रकृति से जुड़ने का, जीव के संसार में आने का यही रहस्य है। कई ऋषि कहते हैं कि जीव और प्रकृति का संयोग लूले और अन्धे का संयोग है, पर यह बात शायद परमेश्वरहीन प्रकृति के विषय में होगी। परमेश्वरी प्रकृति तो अन्धी नहीं है। मुझे तो यह सम्बन्ध माता और पुत्र का लगता है। इसलिए यह सम्बन्ध केवल भोग में नहीं किन्तु अपवर्ग में (अपवर्ग के भोग में) भी बना रहता है। पुत्र माता के बिना नहीं रह सकता और माता पुत्र को चाहती है। ऋषि ने ठीक कहा है "पृथिवी सब भूतों को मधु है और सब भूत पृथिवी को मधु हैं।" वास्तव में दोनों एक-दूसरे से सुख पा रहे हैं और एक-दूसरे को सुख दे रहे हैं। क्या हम ही प्रकृति से सुख पाते हैं और प्रकृति हमसे सुख नहीं पाती?नहीं। तनिक प्रकृति को बेजान मत समझो, प्रकृति को "परमेश्वर की प्रकृति" के रूप में देखो।

शब्दार्थ—एकः सुपर्णः=एक सुपर्ण पक्षी है सः=वह समुद्रम्=इस संसारान्तरिक्ष के समुद्र में आविवेश=आया है सः=वह इदं विश्वं भुवनम्=इस सम्पूर्ण संसार को विचष्टे=विविध प्रकार से देखता है, इसका मज़ा लेता है, परन्तु तम्=उसे पाकेन मनसा=परिपक्व ज्ञानवाले मन से अन्तितः=समीपता से अपश्यम्=देखा है तो मैं देखता हूँ कि तम्=उसे माता=माता रेहि=चूम रही है सः उ=और वह मातरम्=माता को रेहि=चाट रहा है।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

श्रावणी महापर्व पर प्रकाशित प्रमाणित जीवन चरित्र

योगेश्वर श्रीकृष्ण

लेखक- स्व. पं. चमूपति एम. ए.
पृष्ठ संख्या-256, मूल्य - 100/- रुपये

पं. चमूपति द्वारा लिखित "योगेश्वर कृष्ण" अनोखा प्रसाद जन साधारण के लिए उपलब्ध है। अप्रतिम विद्वान पं. चमूपति जी ने योगेश्वर कृष्ण का जीवन चरित्र निष्पक्ष एवं प्रमाण सहित लिखा है। यह जीवन चरित्र ज्ञान पिपासु व्यक्तियों के लिए हर प्रकार से पठनीय एवं संग्रहणीय है। यह पुस्तक 23X36 के बड़े साईज पर विलारपुर टी. ए. कागज पर मुद्रित है तथा कम्प्यूटर द्वारा तैयार की गई है। लैमिनेशन कर टाइटल को अत्यन्त आकर्षक बनाया गया है।

जन्माष्टमी से पूर्व अग्रिम आदेश करने पर यह पुस्तक मात्र 50 रुपये में दी जायेगी। अपनी धनराशि **"सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा"** के नाम "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर शीघ्र भेजें। दूरभाष संख्या-011-23274771, 23260985 पर सम्पर्क कर सकते हैं। (डाक व्यय तथा पैकिंग खर्च के 25 रुपये अतिरिक्त देने होंगे।)

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वेदों के पुनः प्रकाशन की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उ[illegible]ब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

ऋषि निर्वाण दिवस (दीपावली) तक अग्रिम राशि भेजने वालों को दिया जायेगा

मात्र 2100/- रुपये में एक सैट

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

-: प्रकाशक :-
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)

सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।